नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

डिजिटल क्रांति की शुरूआत शिक्षा संस्थानों से हों -विजय कुमार मल्होत्रा

'हिंदी में भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन की चुनौतियां' विषय पर

हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन

भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग का आयोजन

वर्धा, 07 अप्रैल 2016: तकनीकी सशक्तिकरण के लिए डिजिटल क्रांति एक महत्वाकांक्षी योजना है। इस क्रांति की शुरूआत शिक्षा संस्थाओं से होनी चाहिए। उक्त अपेक्षा तकनीकी विशेषज्ञ

विजय कुमार मल्होत्रा ने व्यक्त की। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'हिंदी में

भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन की चुनौतियां' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (7 से 9 अप्रैल)

के उदघाटन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर मंच पर वक्ता के रूप में प्रो. वशिनी शर्मा, संकाय अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल एवं डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय का भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा महामना पं. मदनमोहन

मालवीय शिक्षा मिशन के अंतर्गत विश्वविद्यालय में स्थापित 'हिंदी का शिक्षण-प्रशिक्षण केंद्र' के तत्वावधान आयोजित संगोष्ठी का उदघाटन हबीब तनवीर सभागार में किया गया।

विजय कुमार मल्होत्रा ने विश्वविद्यालय की अंतरराष्ट्रीय पहचान का जिक्र करते हुए कहा कि यहां तकनीकी के क्षेत्र में अनेक प्रकार के कार्य हो रहे हैं और भाषा एवं तकनीकी के सहयोग से विश्वविद्यालय आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कंम्यूटर से आए परिवर्तनों और भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन की चुनौतियों को अपने वक्तव्य में समाहित किया। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए वशिनी शर्मा ने कहा कि तकनीकी की शिक्षा की शुरूआत बुनियादी शिक्षा से ही करनी चाहिए और इसमें हिंदी को अहम महत्व दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी भी मोबाइल में हिंदी में लिखने की चुनौती है और इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमें हिंदी के तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने हेतु प्रयास करने चाहिए।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि तकनीकी के प्रवेश से हमारे सोचने और लिखने का तरीका ही बदल गया है। उन्होंने माना कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय जगत में

स्थापित करने के लिए तकनीकी का ही उपयोग करना होगा। इस दिशा में हम अनेक प्रयोग कर रहे हैं और संभावनाओं को पहचान कर आगे बढ़ रहे हैं।

इस दौरान स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट तीन शोध पत्रों को पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार साहित्य विद्यापीठ के शोधार्थी प्रदीप त्रिपाठी को, द्वितीय पुरस्कार इसी विद्यापीठ की शोधार्थी भावना मासिवाल को तथा तृतीय पुरस्कार स्त्री अध्ययन विभाग की शोधार्थी चित्रलेखा अंशु को अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया। प्रतियोगिता का संयोजन सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी ने किया।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत चरखा, पुष्पगुच्छ और खादी-माला प्रदान कर किया गया। स्वागत वक्तव्य भाषा विद्यापीठ के संकाय अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने किया। संगोष्ठी का

परिचय वक्तव्य भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने दिया। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धनजी प्रसाद ने किया।

उदघाटन कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, संकाय अध्यक्ष, अध्यापक, प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।